Language of Hindi Journalism

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा

Presented by

Dr. Archana Bharti

Guest Faculty, MJMC

Sem-1, Paper- 101

Date- 12/07/2021

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा

- आरंभिक दौर में हिन्दी पत्रकारिता की भाषा की बात करें तो पहले इसमें साहित्य की भाषा हुआ करती थी। क्योंकि उस समय हिन्दी पत्रकारिता साहित्य के बहुत करीब थी और साहित्यकारों का भी उस समय जुड़ाव अधिक रहता था।
- हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास पर एक नजर डालें तो, 30 मई 1826 को हिन्दी का पहला साप्ताहिक पत्र 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन कलकत्ता से शुरू हुआ था। इसमें हिन्दी भाषा के 'बृज' और 'अवधी' भाषा का मिश्रण होता था।

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा

- ''उदंत मार्तंड'' के संपादक युगल किशोर शुक्ल से लेकर पंडित मदन मोहन मालवीय, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू राव विष्णु पराड़कर, आचार्य शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी सहित अनेक ऐसे चर्चित साहित्यकारों का जुड़ाव हिन्दी पत्रकारिता में रहा।
- हिन्दी पत्रकारिता में भाषा का अतुलनीय योगदान रहा है। सामाजिक सरोकार और जनहित के मुद्दों को प्रभावी सकारात्मकता के साथ आम लोगों को सुलभ तरीके से पहुंचाने में हिन्दी भाषा पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका है।

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा

- समय के साथ–साथ हिन्दी पत्रकारिता की भाषा भी बदल गयी है। आज हिन्दी पत्रकारिता में हिन्दी की भाषा में 'हिंग्लिश' का प्रभाव है।
- हिन्दी पत्रकारिता की भाषा में एक बड़ा परिवर्तन 80–90 के दशक में देखने को मिलता है। इस समय के पत्रकार जैसे कि राजेन्द्र माथुर, प्रभाष जोशी, सुरेन्द्र प्रताप सिंह जैसे कुशल संपादक के नेतृत्व में अखबार और पत्रिकाओं की भाषा एक तेवर में होती थी।

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा

- प्रिंट मीडिया और निजी सेटेलाइट चैनलों की भाषा जहां अलग है वहीं सरकारी मीडिया चैनल की भी अलग भाषा है।
- पत्रकारिता में साहित्यिक भाषा के स्थान पर सहज और सरल हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाता है।
- आज अगर पत्रकारिता की भाषा की बात करें तो 'अच्छी भाषा वही है जो सूचना/खबर/जानकारी को स्पष्ट, सरल और सहज तरीके से लोगों तक पहुंचाए'।

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा

- बाबूराव विष्णु पराड़कार ने भी 'मीडिया की भाषा को आमजन, मजदूर, अशिक्षित या कम शिक्षितों की भाषा बनाने पर विचार दिया था। इन सबके बीच आज क्षेत्रीय बोलियों का भी समावेश हुआ है।
- क्षेत्रीय स्तर पर अखबारों के प्रकाशन से भाषा में भी बदलाव देखने को मिलता है। जिससे पाठकों का जुड़ाव होता है।
- आज मीडिया खुद अपनी भाषा गढ़ रहा है। हिन्दी में अंग्रेजी का समावेश देखने को मिलता है। जिसमें शीर्षक आधा हिन्दी और आधा अंग्रेजी में रहता है।

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा

- देशज शब्द के साथ–साथ अंग्रेजी शब्दों का प्रचलन बढ़ा है और आज यह हिन्दी पत्रकारिता का एक हिस्सा बन चुका है।
- वर्तमान समय में सबसे बड़ी चुनौती हिन्दी पत्रकारिता की बदलती भाषा को लेकर है। जहां अनुशासनहीन भाषा की संरचना विकसित हो गई है। ऐसे में भाषा की गंभीरता पर प्रश्न चिन्ह उठता है।
- वरिष्ठ पत्रकार राजकिशोर जी के अनुसार, हिन्दी पत्रकारिता की भ्रष्ट होती भाषा के पीछे मालिकों की सोच जिम्मेदार है।

हिन्दी पत्रकारिता की भाषा

- अतः पत्रकारिता की भाषा सौम्य, सभ्य, सरल, सुबोध और शुद्ध होनी चाहिए।
- पत्रकारिता के लिए संपादक को घटनाओं के साथ भाषा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उसे अलग–अलग घटनाओं को भाषा में पिरोने की कला और संपादन में विषय विशेष से संबंधित पदावली के साथ–साथ साहित्य की भी जानकारी होनी चाहिए।
- भाषा जितनी सुगठित और मंजी हुई होगी, पाठक पर उसका असर उतना ही गहरा होगा।